दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-III (प्रश्नपत्र-3)

DTVF/18(JS)-HL-**HL3**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 03 - 07/07/2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	3	9	4	7	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): Ravi Sihag

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन मे अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमजोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेजों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में आर्य समाज का योगदान

स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा 1875 में स्थापित आर्य समाज का राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में प्रमुख योगदान है। केशवचन्द्र सेन से प्रभावित होकर स्वामी जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना हिंदी में की। तर्क-वितर्क की शैली में लेखन करते हुए इन्होंने हिंदी भाषा में तार्किक शैली का सूत्रपात किया।

आर्य समाज के संगठन में भी हिंदी सीखना अनिवार्य था। समाज के पाँच सबकों में हिंदी का पाठ करना भी महत्वपूर्ण था।

इसके अलावा आगे चलकर इसी समाज के लाला हंसराज द्वारा स्थापना स्थापित 'दयानन्द एंग्लो वैदिक' एवं स्वामी श्रद्धानंद द्वारा स्थापित 'गुरुकुलों' के द्वारा हिंदी का प्रचार-प्रसार व शिक्षण कार्य किया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आर्य समाज के प्रमुख शिष्यों में लाला लाजपतराय ने 'राष्ट्रीय शिक्षण विद्यालय' की स्थापना कर लाखों विद्यार्थियों को हिन्दी का ज्ञान कराया। उन्हीं के प्रयासों से 'पंजाब विश्वविद्यालय' में हिन्दी का अनिवार्य पठन प्रारंभ हुआ।

इसके अलावा आर्य समाज की अनेक शाखाएँ खुलने से हिंदी का राष्ट्रभाषा के तौर पर राष्ट्रव्यापी प्रसार हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बाल गंगाधर तिलक एक प्रमुख राष्ट्रवादी नेता थे जिन्होंने महाराष्ट्र में आंदोलन का नेतृत्व किया।

महाराष्ट्र में तिलक पहले नेता थे जिन्होंने वास्तविक अर्थों में हिन्दी के महत्व को पहचाना। ये हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे व देवनागरी को राष्ट्रलिपि।

इन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु 'हिन्दी केसरी' नामक पत्र का भी संचालन किया। इस पत्र में इन्होंने, विभिन्न लेखों के माध्यम से हिंदी के पक्ष में सशक्त आंदोलन चलाया।

हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्रिंटिंग प्रेस के माध्यम से उत्प्रेरित करने के लिये तिलक ने देवनागरी लिपि हेतु 180 शब्दों का फॉन्ट तैयार किया जिसे 'तिलक फॉन्ट' के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार के प्रयासों से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

देवनागरी व हिंदी का राष्ट्र व्यापी प्रसार हुआ।

न केवल व्यक्तिगत रूप में बल्कि अपने अनुयायियों को भी इन्होंने हिंदी का प्रचार-प्रसार करने की शिक्षा दी। महाराष्ट्र के सावरकर बंधुओं का योगदान भी इस दिशा में प्रमुख है जिन्होंने हिंदी भाषा व लिपि के विकास का प्रयास किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) देवनागरी लिपि पर गैर हिन्दी भाषाओं और अन्य लिपियों का प्रभाव

देवनागरी लिपि का विकास मुख्य रूप से ब्राह्मी लिपि से हुआ है। यदि ब्राह्मी लिपि कालान्तर में गुप्तकाल में गुप्तलिपि के माध्यम से सातवीं शताब्दी के आस-पास नागरी लिपि में पर्यवसित हुई। यदि गैर हिन्दी भाषाओं व अन्य लिपियों के प्रभाव की बात करें तो निम्न प्रभाव दृष्टिगोचर हैं-

(क) ध्वनियों के स्तर पर

फारसी शब्द - ग़, ज़, फ़
अंग्रेजी से - ज़, फ
मराठी से - ळ
अंग्रेजी से - ऑ (डॉक्टर)

(ख) अनुस्वार व्यवस्था -
हिन्दी में चीनी तिब्बती बोलियों में जो अनुनासिकता विद्यमान है वह बिन हिन्दी में भी मिलती है।

(ग) आधुनिक समय में कर्मवाच्य वाक्यों में अंग्रेजी वाक्य विन्यास का प्रभाव दिखाई पड़ता है जैसे -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिंदी - 'उसने कहा था कि मैं जाऊँगा' की जगह अंग्रेजी के 'उसने कहा था कि वह जायेगा' का अनुचित प्रभाव।

इस प्रकार देवनागरी लिपि में ध्वनि व्यवस्था - वर्तनी व्यवस्था, चिह्नों के स्तर पर अनेक भाषाओं व लिपियों का प्रभाव दिखलाई पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण के क्षेत्र में योगदान

केलॉग उन शुरुआती लोगों में से थे जिन्होंने हिंदी का व्याकरण लिखने का प्रयास किया था। इनके व्याकरण की प्रमुख विशेषताएँ निम्न है-

(क) व्याकरण में प्रयोगिक या व्यावहारिक बोलचाल के उदाहरणों का प्रयोग।

(ख) विभिन्न पुराने विद्वानों की रचनाओं की केवल उन्हीं पंक्तियों या उदाहरणों को उठाया जो कि विवादित नहीं थे।

(ग) ब्रजभाषा एवं अवधी की व्याकरणिक विशेषताएँ भी जो खड़ी बोली में दिखाई पड़ती है, का उल्लेख किया।

(घ) व्याकरणिक स्तर पर कुछ मानकता लाने का प्रयास किया गया जो पुराने लेखकों में नहीं थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) उन्नीसवीं सदी का खड़ी बोली आन्दोलन और अयोध्या प्रसाद खत्री

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में गद्य भाषा के क्षेत्र में तो खड़ी बोली स्थापित हो गई थी परन्तु पद्यभाषा के क्षेत्र में यह प्रयास महावीर प्रसाद द्विवेदी के आगमन के पश्चात् हुआ। द्विवेदी जी के साथ-साथ, श्रीधर पाठक, बाबु श्यामसुंदर दास के बाद अयोध्या प्रसाद खत्री का भी प्रमुख योगदान है।

इन्होंने खड़ी बोली का व्याकरण लिखकर खड़ी बोली का विकास करने में भूमिका निभाई। इसके साथ-साथ इनके द्वारा खड़ी बोली में कुछ प्रारम्भिक कविताओं की रचनाएँ भी की।

श्रीधर पाठक की भाँति खड़ी बोली के पद्यभाषा के पक्ष में आंदोलन चलाने का श्रेय खत्री जी को है। अनेक आलोचनाओं के बाद भी ये अपने क्षेत्र में डटे रहे व हार नहीं मानकर अन्ततः खड़ी बोली का मानकीकरण व पद्यभाषा के रूप में संस्थापना में सफल हुए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) क्या आप राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति को संतोषजनक मानते हैं? इस स्थिति को और बेहतर कैसे बनाया जा सकता है? सुझाव दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संविधान के लागू होने के पश्चात - राष्ट्रपति आदेश, राजभाषा आयोग 1955, राजभाषा अधिनियम 1967 (संशोधित), संसदीय संकल्प 1979, के साथ-साथ सरकारी स्तर पर गृहमंत्रालय का राजभाषा-विभाग आदि हिंदी के राजभाषा के विकास के रूप में कार्य कर रहे हैं।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग जहाँ हिन्दी की विभिन्न मंत्रालयों में प्रगति में देखता है, साथ ही केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से कर्मचारियों को हिन्दी प्रशिक्षण भी प्रदान करता है।

इसके साथ-साथ गृह मंत्रालय का अनुवाद ब्यूरो प्रशासनिक शब्दावली का, विधि मंत्रालय का विधिक विधायी आयोग विधायी शब्दावली का अनुवाद करता है। शिक्षा मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय हिंदी के प्रचार-प्रसार को शिक्षा के माध्यम से सम्पन्न कराता है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में 'केन्द्रीय हिन्दी समिति' भी विद्यमान है -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

परन्तु यदि वास्तविक धरातल पर देखें तो हिंदी की प्रगति मात्रात्मक अधिक, गुणात्मक कम है। सरकार केवल हिंदी के विकास के दावे करती है। वस्तुतः सरकार में वह दृढ़-इच्छाशक्ति का ही अभाव है जो हिन्दी के विकास हेतु चाहिये। इसकी कुछ बानगियाँ निम्न है-

(क) संविधान के गठन के 10 वर्षों बाद जिस आयोग का गठन किया जाना था, वह अभी तक नहीं किया गया।

(ख) हिंदी के प्रचार का सर्वोत्तम संगठन प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय हिन्दी समिति है जिसकी दस-दस वर्षों में कोई बैठक नहीं होती है।

(ग) कर्मचारियों के प्रशिक्षण, प्रोत्साहन व पुरस्कार के होने के बावजूद कर्मचारी वर्ग पुनः अंग्रेजी में कार्य करने लग जाता है। इसके लिये कोई कठोर दण्ड की व्यवस्था नहीं है।

(घ) राजभाषा आयोग की स्थिति भी बिना विष के सर्प की है। यह आयोग हिंदी

के विकास हेतु अनेक सलाहें भेजता है, बैठक करवाता है परन्तु इसकी सलाहों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है।

(ङ) अनुवादों की जटिलता व दुरूहता के कारण एक नई भाषा पढ़ने का एहसास होता है। साथ ही एक शब्द के अनुवाद पर 5000 रुपये खर्च होने से इसकी गति का अनुमान भी लगा सकते हैं।

(च) राजनीतिक दृढ़ता की कमी के कारण त्रिभाषा सूत्र अभी तक लागू नहीं किया गया है।

सुझाव :-

(क) त्रिभाषा सूत्र को शब्दशः एवं पूरी दृढ़ता के साथ लागू किया जाये। इस हेतु पहलकदमी उत्तरी राज्यों द्वारा की जाये।

(ख) अनुवादों के स्तर पर नये प्रयोग किये जाने चाहिये जैसे- अंग्रेजी के शब्दों को थोड़ा हिन्दी पुट देकर या उनके आगे संस्कृत उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर प्रयोग कर सकते हैं।

(ग) कर्मचारियों को प्रशिक्षण पश्चात हिंदी प्रयोग हेतु बाध्य करना चाहिये। साथ ही, प्रशिक्षण की प्रक्रिया को

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी सरल व रोचक बना सकते हैं।

(घ) संघ लोक सेवा आयोग जैसी परीक्षाओं में हिंदी का अनिवार्य प्रश्न-पत्र लगाया जाना चाहिये एवं लोकसेवकों के प्रशिक्षण के स्तर पर हिंदी भाषा में प्रशिक्षण को अनिवार्य करना चाहिये।

(ङ.) हिंदी भाषा में वैज्ञानिक व तकनीकी अनुप्रयोगों को बढ़ावा देना चाहिये जैसे- लेखन पैड, भाषा पहचान (ध्वनि) सॉफ्टवेयर, लिखित भाषा को मुद्रितरूप में प्रकट करना।

(च) अन्ततः राजभाषा आयोग को वास्तविक रूप में कुछ शक्तियाँ प्रदान की जानी चाहिये ताकि इसकी सलाहें व कार्य मात्र कागजी शेर बनकर न रहे।

इन सभी उपायों की मदद से ही हिंदी को अखिल भारतीय स्तर पर एक राजभाषा के रूप में स्थापित कर सकते हैं जो देश की एकता व एकीकरण में सहायक होगी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्वाधीनता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में महाराष्ट्र के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान देश के नेताओं ने विभिन्न युक्तियों के साथ जिस युक्ति को आंदोलन को उत्प्रेरित करने में सबसे प्रभावी माना, वह थी 'हिन्दी भाषा का प्रयोग'।

चूंकि महाराष्ट्र में मुंबई, नागपुर, पुणे आदि राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख केन्द्र थे अतः इन स्थानों पर राष्ट्रीय आंदोलन को गति देने में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाना लाजिमी था।

बंगाल के नेताओं जैसे राजा-राममोहन राय, केशवचन्द्रसेन, बंकिम चन्द्र चटर्जी के योगदानों से प्रभावित होकर महाराष्ट्र के नेताओं ने भी हिन्दी के प्रचार प्रसार का बीड़ा उठाया। इस दिशा में सबसे प्रमुख नाम था- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक। तिलक ने 'हिन्दी केसरी' नामक पत्र के माध्यम से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिंदी का प्रचार-प्रसार किया। इसके अलावा लिपि सुधार के रूप में 'तिलक फॉन्ट' का आविष्कार कर इन्होंने मुद्रण में हिंदी का प्रयोग बढ़ाया।

महाराष्ट्र में हिंदी भाषा का वास्तविक प्रयोग महात्मा गांधी के राष्ट्रीयता आंदोलन का प्रयासों से हुआ। इससे पहले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना मुंबई में हो चुकी थी। महात्मा गांधी ने हिन्दी को स्वराज्य का मुद्दा बना दिया। इस हेतु महाराष्ट्र के वर्धा में 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' का गठन हुआ। इसके साथ-साथ पुरुषोत्तम दास टंडन, काका कालेलकर जैसे अन्य नेता उभरे जिन्होंने हिंदी के प्रचार की बागडोर संभाली।

पुरुषोत्तम दास टंडन को हिंदी का प्रहरी भी कहा जाता है। इन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का उद्घाटन किया, जिनकी परीक्षाओं में लाखों विद्यार्थी बैठ चुके हैं। इसके अलावा काका कालेलकर ने भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कांग्रेस की कार्यवाहियों में हिन्दी के प्रयोग की भारी वकालत की।

अनेक प्रचार संस्थाओं के साथ महाराष्ट्रवासियों के योगदान के द्वारा ही हिन्दी का तीव्र विकास संभव हो पाया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में काका कालेलकर और मदनमोहन मालवीय के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मदन मोहन मालवीय का योगदान :-

हिन्दी के विकास में मदनमोहन मालवीय एक प्रमुख हस्ताक्षर है जिन्होंने सम्पूर्ण सामर्थ्य से हिन्दी का प्रचार किया। 1886 में अधिवेशन में इनके भाषण से प्रभावित होकर काला काँकर जी द्वारा इन्हें हिन्दी पत्र 'अभ्युदय' की कमान सौंपी, जिसमें इन्होंने हिंदी का प्रचार प्रसार किया।

20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में इन्होंने 'हिन्दुस्तान' पत्र का संपादन किया। 1910 में भी 'मर्यादा' पत्र का प्रारंभ किया जो शुरुआत में साप्ताहिक था परन्तु बाद में दैनिक पत्र बन गया।

इसके साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में इन्होंने बनारस में 'बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय' की स्थापना की जिसमें हिन्दी भी एक अनिवार्य विषय था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संस्थानों की स्थापना के स्तर पर भी इन्होंने काशी में 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना कर हिन्दी को विकसित करने का प्रयास किया। इस सभा के द्वारा हिन्दी साहित्येतिहास लेखन, नागरी लिपि जैसी अनेक परियोजनाएँ अभी भी चलाई जा रही हैं।

इस प्रकार हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा बनाने में मदन मोहन मालवीय जी का योगदान अतुलनीय है।

काका कालेलकर जी का योगदान :- हिंदी के विकास में जिन गैर-हिन्दी भाषी व्यक्तियों का योगदान है, उनमें काका कालेलकर शिखर पर है।

सर्वप्रथम इनका सबसे प्रमुख योगदान यह है कि इन्होंने सबसे पहले यह सिद्ध किया कि हिन्दी दुनिया की किसी भी भाषा से कमतर नहीं है एवं हिन्दी की वैज्ञानिकता अत्यन्त उच्च स्तर की है।

हिन्दी के विकास में दूसरा योगदान इन्होंने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'हिन्दुस्तानी' भाषा के प्रसार के साधकियों।
वे हिन्दी को हिन्दुस्तानी के रूप में
परिभाषित करते थे। गुजरात में रहकर
एक उच्च स्तर पर 'हिन्दी साहित्य
समिति' की अध्यक्षता भी इन्होंने की।
इसके अलावा महात्मा गांधी के अनुयायी
के रूप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में भी
प्रमुख भूमिका निभाई।

अतः इस प्रकार हिन्दी क्षेत्रों के
अतिरिक्त क्षेत्रों भी हिन्दी की गूंज यदि
सुनाई दी है तो वह काका कालेलकर जैसे
व्यक्तियों के प्रयासों से।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) 'परख' की 'कट्टो'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैनेन्द्र एक मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार है। उनके उपन्यासों के नारी पात्र पुरुष पात्रों की अपेक्षा अधिक सक्रिय सचेत है। नारी स्वभाव व प्रकृति के आदि-नियम के अनुरूप स्त्रियों का स्नेह पक्ष अधिक सजीव, जीवंत व कहीं-कहीं तो आक्रामकता की हद तक हावी होने वाला है।

'परख' उपन्यास की 'कट्टो' इसी विचार का प्रतिनिधित्व करती है। वह एक बाल विधवा है। जैनेन्द्र ने इस चरित्र के द्वारा अपने प्रेम संबंधी मूल्यों का प्रक्षेपण किया है। 'परख' के कट्टो के द्वारा 'सत्यधन' से एकपक्षीय प्रेम करना, सत्यधन का गरिमा से विवाह करने पर भी जलन या द्वेष उत्पन्न न करना, बिहारी से विवाह के उपरांत उसे भी अपने दिल में स्थान देना, वैधव्य यश का आयोजन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करना आदि प्रसंगों द्वारा जैनेन्द्र ने प्रेम पथ के मूल में 'अहं के विसर्जन' की भावना को बताया है।

'परख' की कट्टो आत्मा की प्रतीक है जो अपने चरित्र में पूर्णतः ईमानदार, निष्ठा, प्रेम को धारण करने वाली है।

इसके अलावा सत्यधन को रुपये देने के प्रसंग के द्वारा स्त्री के त्याग का प्रतिनिधित्व भी कट्टो ने बखूबी किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी का प्रगतिवादी उपन्यास

प्रेमचन्दोत्तर युग में मनोविश्लेषणवादी धारा के समानांतर जो प्रमुख धारा विकसित हुई, वह प्रगतिवादी धारा ही थी। मार्क्सवाद से प्रभावित इस धारा के उपन्यासों की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं-

(क) उपन्यास का उद्देश्य मनोरंजन, चमत्कार पैदा न कर निम्न वर्ग में शोषण के विरुद्ध तनाव का सृजन करना है।

(ख) कथानक प्रायः सीधा, स्पष्ट व सरल होता है।

(ग) भाषा भी प्रायः सादी व सरल होती है जो आम आदमी तक क्रान्ति के विचारों को आसानी से प्रक्षेपित कर सके। ये रचनाकार भाषा में दुरूह शब्दों, प्रतीकों, सूत्र-वाक्यों के विरोधी हैं।

(घ) वर्गगत चरित्र, उक्त कथानक की धारणा को ध्वस्त कर रचना के केन्द्र में निम्न वर्गीय पात्र आते हैं जो कि संघर्ष के विरुद्ध आवाज उठाकर क्रान्ति चेतना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का आह्वान करते हैं।

(5.) समाज के निम्न वर्गों की समस्याओं का विस्तारपूर्वक चित्रण।

उदाहरण-

अश्पाल - 'दिव्या', 'दादा कॉमरेड', 'पार्टी कॉमरेड', 'झूठा सच'

नागार्जुन - 'बाबा बटेसरनाथ'

रांघेयराघव - 'घरौंदा'

समाधान: इन उपन्यासों पर विचारधारा हावी रहती है परन्तु जिनमें विचारधारा का स्थूल प्रक्षेपण नहीं हुआ है, व अत्यन्त सुंदर बन पड़े हैं जैसे - दिव्या।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पद्माकर का शृंगार-वर्णन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्माकर रीतिबद्ध काव्यधारा (रीतिकाल) में प्रमुख स्थान रखते हैं। चूंकि रीतिकालीन साहित्य दरबारों में रचा गया; शृंगार की ~~प्रमुखता~~ विषयवस्तु केन्द्र में थी, अतः पद्माकर ने भी शृंगारपक्ष के संयोग व वियोग पक्ष का अत्यन्त सुंदर चित्रण किया है।

प्रमुख ग्रंथ- जगतविनोद व पद्माभरण

(क) पद्माकर का संयोग पक्ष वस्तुतः देहमूलक शृंगार पर आधारित है। नारी को भोग की वस्तु मानकर उसके रूप, स्वरूप, अलंकारों का सुंदर वर्णन पद्माकर ने किया है। प्रसंग चाहे 'गुलगुली गिल में गलीचा है' का हो या 'गोरी गरबीली तेरे गात की गुराई आगे' का हो, पद्माकर का संयोग व विलासों का वर्णन अप्रतिम है।

(ख) पद्माकर ने संयोग पक्ष में विभिन्न त्यौहारों में मुख्यतः होली के प्रसंग में नर-नारी की काम क्रीडाओं को अपनी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कविता की विषय-वस्तु बनाया है-

"या अनुराग की फाग लखौ, जहँ राजत राग किशोर-किशोरी
गौरी के संग भीजिगो साँवरो, साँवरे के संग भीजिगो गौरी"

(ग) तीसरे, पद्माकर के श्रृंगार का वियोग पक्ष भी ऋतु के अनुसार तीव्रता व मार्मिकता में व्यक्त होता है-

"जो विरह बनायो तो न पावस बनाओ
जो पावस बनाओ तो न विरह बनाओ"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) घनानंद की काव्य-भाषा

शुक्ल जी के अनुसार रीतिकालीन कवियों में यदि किसी कवि की सुस्पष्ट, प्रांजल एवं परिमार्जित भाषा है तो वह घनानंद है।

घनानंद मुख्यतः रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि हैं जो कविता को उद्देश्य मानकर उसके अनुरूप अपनी गहरी संवेदनाओं का अत्यन्त आवृत्ता व मार्मिकता के साथ उद्घाटन करते हैं। 'मोहि तो मेरे कवित्त बनावत' जैसी मानसिकता के साथ भाषा में भी चमत्कार करते हैं।

सर्वप्रथम उनकी ब्रजभाषा सबसे शुद्ध प्रवृत्ति की है। बिहारी की तरह इस भाषा में पूर्वी, बुंदेलखंडी या अन्य किसी भाषा के शब्द नहीं आये हैं। इसी शुद्धता की वजह से घनानंद को 'ब्रज प्रवीन' या भाषा प्रवीन भी कहा जाता है।

दूसरे, घनानंद ने भाषा में आलंकारिकता के प्रति मोह न रखकर स्वाभाविकता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से भाषा का प्रयोग किया है। मुहावरे - लोकोक्तियों का प्रयोग भाषा को जन-सामान्य के निकट लाता है। इसके अलावा अलंकार भी यदि आये हैं तो वे चमत्कार करने के लिये बल्कि भावों की सहज प्रस्तुति हेतु आये हैं-

"उजरनि बसी है, हमारी अँखियानी देखो"
(विरोधाभास)

अतः अप्रस्तुत विधान के प्रति उदासीनता, भाषा व व्याकरण की शुद्धता, शिल्प का स्वाभाविक प्रयोग, शैली में लाक्षणिकता का प्रयोग घनानंद की भाषा को रीतिकाल की 'अनुपम वस्तु' के रूप में पेश करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) उन्नीसवीं सदी में हिन्दी गद्य के विकास में प्रताप नारायण मिश्र के अवदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतेन्दु युग (1850-1900) में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के बाद यदि कोई व्यक्तित्व प्रमुख एवं रोचक है तो वह प्रताप नारायण मिश्र जी हैं। उन्नीसवीं सदी में मिश्र जी ने अपने निबंधों, नाटकों, उपन्यासों के द्वारा हिंदी गद्य के विकास में प्रमुख योगदान दिया।

भाषायी स्तर पर उनके विचारों की संक्षिप्त चर्चा करें तो मिश्र जी हिन्दी भाषा में संस्कृतनिष्ठता के समर्थक नहीं थे। उनकी भाषा लोकभाषा के धारण करती है। उनकी भाषा का एक नमुना इस प्रकार है-

अब तो आप समझ गये होंगे न कि आप क्या हैं? कौन हैं और कहां के हैं?"

रचना के स्तर पर सर्वप्रथम मिश्रजी का योगदान पत्रकारिता के स्तर पर था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation